

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 13: इन्द्र का पाप

3 October 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



यद्यपि सभी लोक वृत्र के पतन पर आनन्दित हुए, केवल इन्द्र को शान्ति न मिली; ब्रह्महत्या के पाप से पीछा किए जाते हुए, वे मानस सरोवर के कमल के तन्तुओं में छिप गए और भगवान् हरि के स्मरण में शरण ली।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का तेरहवाँ अध्याय युद्धभूमि से एक राजा के अन्तःकरण की ओर मुड़ता है। वृत्र के वध ने प्रत्येक लोक को भय से मुक्त कर दिया — प्रत्येक लोक को, किन्तु एक हृदय को नहीं। जिसने प्रहार किया, वही इन्द्र ब्रह्महत्या के पाप से व्याकुल है, और केवल अश्वमेध यज्ञ द्वारा भगवान्

नारायण की आराधना, तथा उनके पावन नाम की पावन शक्ति ही उस कलंक को धो सकती है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 13 (त्रयोदश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: पाप-प्रतिक्रिया से पीड़ित राजा इन्द्र
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए; कथा के भीतर इन्द्र तथा ऋषिगण
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: स्वर्ग, मानस सरोवर, तथा अश्वमेध यज्ञ का स्थल
- केन्द्रीय विषय: वृत्र-वध का इन्द्र का पाप तथा भगवान् नारायण की आराधना से उसकी शुद्धि
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 13, श्लोक 1-23
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

वह एक हृदय जिसे शान्ति न मिली

वृत्र के मारे जाने पर, तीनों लोक तथा उनके अधिष्ठाता देवता तत्काल चिन्ता से मुक्त और हृदय से प्रसन्न हो गए — केवल इन्द्र को छोड़कर। देवता और ऋषि, पितर और भूत, असुर और स्वर्ग के अनुचर अपने-अपने लोकों को लौट गए, और ब्रह्मा, शिव तथा अन्य महान् देवता बिखर गए। यह सुनकर राजा परीक्षित ने वह प्रश्न पूछा जो इस अध्याय का हृदय है: इन्द्र उसी कर्म से क्यों पीड़ित हैं जिससे अन्य सभी को राहत मिली? (श्लोक 1-3)



वृत्र से भयभीत देवता और ऋषि इन्द्र से उसका वध करने की विनती करते हैं, किन्तु राजा ब्रह्महत्या के भय से हिचकिचाते हैं (श्लोक 4-5)।

श्रीशुकदेव ने बताया कि वृत्र के पराक्रम से भयभीत देवताओं और ऋषियों ने स्वयं इन्द्र से उसका वध करने की विनती की थी — फिर भी इन्द्र ब्रह्महत्या के भय से हिचकिचा रहे थे। उन्होंने व्याकुल हृदय से उत्तर दिया।

इन्द्र उवाच

स्त्रीभूद्रुमजलैरेनो विश्वरूपवधोद्भवम् ।

विभक्तमनुगृह्णद्विवृत्रहत्यां क्व माज्म्यहम् ॥ ५ ॥

*indra uvāca strī-bhū-druma-jalair eno viśvarūpa-vadhodbhavam vibhaktam anugrṇadabhir
vṛtra-hatyāṁ kva mājmy aham*

अर्थ: इन्द्र ने कहा: विश्वरूप के वध से उत्पन्न पाप तो स्त्रियों, पृथ्वी, वृक्षों और जल ने कृपापूर्वक बाँटकर ग्रहण कर लिया; किन्तु वृत्र-वध के पाप को मैं किस उपाय से धो सकूँगा? (स्कन्ध 6, अध्याय 13, श्लोक 5)

ऋषियों का आश्वासन

ऋषियों ने व्याकुल राजा को आश्वासन दिया। वे व्यवस्था करेंगे, उन्होंने कहा, कि इन्द्र एक अश्वमेध यज्ञ द्वारा भगवान् को प्रसन्न करें, और सब कुशल होगा; उन्हें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। परमात्मा तथा अन्तर्यामी भगवान् नारायण की अश्वमेध द्वारा आराधना करने से, वे समूचे विश्व के संहार के पाप से भी मुक्त हो जाएँगे — तब एक दुष्कर्मी के दमन की तो बात ही क्या। क्योंकि स्वयं पावन नाम, उन्होंने घोषित किया, तत्काल सबसे बड़े पापी को भी शुद्ध कर देता है (श्लोक 6-9)।

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाचार्यहाघवान् ।

श्वादः पुलकसको वापि शुद्धयेरन् यस्य कीर्तनात् ॥ ८ ॥

*brahma-hā pitṛ-hā go-ghno mātṛ-hācārya-hāghavān śvādaḥ pulkasako vāpi śuddhyeran yasya
kīrtanāt*

अर्थ: ब्रह्मा का हत्यारा, गौ का वधकर्ता, पिता, माता या गुरु का घातक, और यहाँ तक कि कुत्ते का मँस खाने वाला अथवा नीच योनि में जन्मा — ये सब भी भगवान् के पावन नाम के कीर्तन से शुद्ध हो जाते हैं। (स्कन्ध 6, अध्याय 13, श्लोक 8)



ऋषि इन्द्र को आश्वस्त करते हैं कि अश्वमेध द्वारा भगवान् नारायण की आराधना, और भगवान् का पावन नाम, प्रत्येक पाप को धो देगा (श्लोक 6-9)।

पीछा करता पाप

इस प्रकार ब्राह्मणों द्वारा प्रेरित होकर, इन्द्र ने अन्ततः वृत्र को मार गिराया — और ब्रह्महत्या की प्रतिक्रिया उन पर आ पड़ी। उन्हें मन की शान्ति न मिली। उन्होंने उस पाप को ही एक दुखिया चाण्डाली स्त्री के रूप में अपना पीछा करते देखा, रोग से क्षीण, रक्तरंजित चिथड़ों में, वृद्धावस्था से काँपते अंगों वाली और बिखरे श्वेत केश वाली, “रुको! रुको!” पुकारती और मछली-सी दुर्गन्ध भरी श्वास से मार्ग को दूषित करती हुई। आकाश में और प्रत्येक दिशा में भागते हुए, इन्द्र अन्ततः ईशान कोण की ओर गए और मानस सरोवर में कूद पड़े, जहाँ वे एक सहस्र वर्ष तक एक कमल-नाल के तन्तुओं में अदृश्य रहकर यह विचार करते रहे कि प्रायश्चित्त कैसे करें (श्लोक 10-15)।

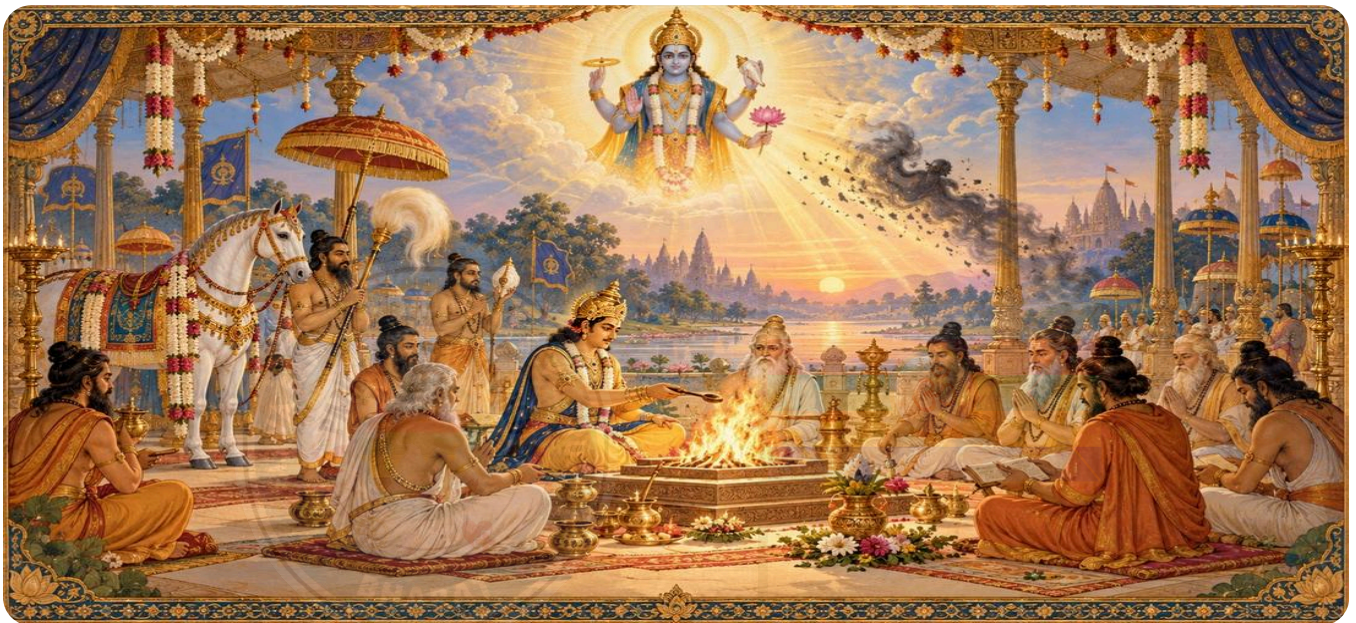


ब्रह्महत्या की प्रतिक्रिया एक दुखिया रूप में इन्द्र का पीछा करती है, और वे एक सहस्र वर्ष मानस सरोवर के कमल में छिपे रहते हैं (श्लोक 10-15)।

उन दीर्घ युगों में राजा नहुष उनके स्थान पर स्वर्ग पर शासन करते रहे; किन्तु शक्ति के अहंकार से अन्धे होकर, वे सर्प-योनि में गिरा दिए गए। इन्द्र, इस बीच, सत्य के आधार श्रीहरि का ध्यान करते हुए, अपने पाप को निस्तेज कर चुके थे; कमलों के उस सरोवर में देवी लक्ष्मी द्वारा संरक्षित, वह शेष प्रतिक्रिया उन पर आघात न कर सकी, और समय आने पर वे स्वर्ग लौट गए (श्लोक 16-17)।

भगवान् द्वारा शुद्धि

तब ब्राह्मण ऋषियों ने इन्द्र को श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिए अर्पित एक अश्वमेध यज्ञ हेतु दीक्षित किया। जैसे ही वेदज्ञ मरीचि आदि ऋषियों द्वारा सम्पादित उस महान् यज्ञ के माध्यम से परमपुरुष की आराधना हुई, वृत्र-वध का वह विशाल पाप-राशि भी शून्य में बदल गई — उगते सूर्य के सम्मुख तुषार के समान पिघल गई। समस्त पापों से पूर्णतः मुक्त होकर, इन्द्र पुनः महान् हो गए (श्लोक 18-21)।



वेदज्ञ ऋषियों द्वारा भगवान् नारायण को अर्पित अश्वमेध यज्ञ से इन्द्र का पाप सूर्य के सम्मुख तुषार-सा पिघल जाता है (श्लोक 18-21)।

यह महान् आख्यान, श्रीशुकदेव ने कहा, प्रत्येक पाप को धो देता है और भक्ति का पोषण करता है, क्योंकि यह भगवान् की स्तुतियों से भरा है और इसमें उनके भक्त वृत्र की कथा के साथ इन्द्र की मुक्ति और विजय समाहित है। इसलिए ज्ञानियों को इसे सदा पढ़ना या सुनना चाहिए, क्योंकि यह पुण्य, यश और दीर्घायु देता है, समस्त पाप-प्रवृत्तियों से मुक्त करता है, और प्रत्येक कल्याण का स्रोत है (श्लोक 22-23)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. धार्मिक आवश्यकता भी एक घाव छोड़ सकती है। इन्द्र देवताओं और ऋषियों के आग्रह पर वृत्र का वध करते हैं, फिर भी ब्रह्महत्या की प्रतिक्रिया वहन करते हैं — एक स्मरण कि परिणाम कर्म का अनुसरण करता है, केवल भाव का नहीं (श्लोक 4-10)।
2. पावन नाम सबसे बड़े पापी को शुद्ध कर देता है। ऋषि घोषित करते हैं कि सबसे गुरुतर अपराधी भी भगवान् के नाम के कीर्तन से शुद्ध हो जाता है — कलंकित हृदय के लिए परम शरण (श्लोक 8)।

3. भगवान् की शरण पाप को विलीन कर देती है। श्रीहरि का ध्यान करने और यज्ञ द्वारा उनकी आराधना से ही इन्द्र का पाप सूर्य के सम्मुख तुषार-सा पिघल जाता है (श्लोक 17-20)।
4. विनम्रता-रहित शक्ति पतन को निमन्त्रण देती है। स्वर्ग के सिंहासन पर बिठाए गए नहुष अहंकार से नष्ट हो जाते हैं — इन्द्र के अपने विनयन के साथ रखी एक मौन चेतावनी (श्लोक 16)।
5. भगवान् की लीलाओं का श्रवण भक्ति बढ़ाता है। श्रीशुकदेव इसी आख्यान को पाप-नाशक और भक्ति-पोषक बताते हैं, बार-बार सुनने योग्य (श्लोक 22-23)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह विलक्षण है कि वृत्र की मृत्यु से दुखी एकमात्र प्राणी वही है जो विजयी हुआ। इन्द्र को अपनी विजय, अपना सिंहासन, अपनी पुनर्प्राप्त महिमा मिली — और इनमें से कोई उन्हें शान्ति नहीं देता, क्योंकि अन्तःकरण का घाव सफलता से नहीं भरता। भागवत यहाँ कोमल और सच्चा है: यह न यह दिखावा करता है कि एक आवश्यक कर्म कोई चिह्न नहीं छोड़ता, न यह कि स्वर्ग का राजा परिणाम के नियम से ऊपर है। इसके स्थान पर यह जो दिखाता है वह घर का मार्ग है। इन्द्र यह तर्क नहीं करते कि वे सही थे, न अपने अपराध-बोध को भोग में डुबाते हैं; वे जल की ओर भागते हैं, एक कमल में छिपते हैं, और अपना मन भगवान् की ओर मोड़ते हैं। और वहीं, स्मरण और आराधना में, कलंक उतरने लगता है। यह अध्याय हमारे सम्मुख किसी एक पाप से बड़ा एक सत्य रखता है: कि कोई दोष भगवान् की कृपा के लिए अति-भारी नहीं, और कोई हृदय उनके नाम से शुद्ध होने के लिए अति-व्याकुल नहीं। जब हमारा अपना अन्तःकरण हमें विश्राम न लेने दे, यही वह शरण है जिसकी ओर भागवत संकेत करता है — न इनकार, न निराशा, अपितु श्रीहरि की शरण।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, एक ऐसी बात स्मरण कीजिए जो आपके अन्तःकरण पर भार है — एक कठोर शब्द, एक विफलता, एक पुराना पश्चात्ताप — और उसका बहाना बनाने या उसके नीचे दबने के स्थान पर, उसे सच्चाई से भगवान् को अर्पित कीजिए। उनका पावन नाम धीरे और ध्यानपूर्वक लीजिए, ऋषियों के इस वचन पर विश्वास करते हुए कि सबसे गुरुतर दोष भी उनके सच्चे स्मरण से शुद्ध हो जाता है। उस भार को उनके हाथों में रहने दीजिए, और हल्के तथा अधिक कृतज्ञ हृदय से उठिए।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का तेरहवाँ अध्याय उस एक हृदय का अनुसरण करता है जिसे विजय सान्त्वना न दे सकी। ब्रह्महत्या के पाप से व्याकुल, इन्द्र मानस सरोवर के कमल में छिप जाते हैं और भगवान् हरि के स्मरण में शरण लेते हैं, जब तक कि अश्वमेध यज्ञ और नारायण की आराधना उनके पाप को सूर्य के सम्मुख तुषार-सा न पिघला दे। इसकी शिक्षा समूचे स्कन्ध की सबसे सान्त्वनादायी शिक्षाओं में से एक है: कि पावन नाम सबसे बड़े अपराधी को भी शुद्ध कर देता है, और व्याकुल अन्तःकरण के लिए भगवान् की ओर सदा एक घर का मार्ग है। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगले अध्याय में राजा चित्रकेतु की कथा की ओर मुड़ता है, हम शुद्धि की इस कृपा का आश्वासन साथ ले चलते हैं।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, त्रयोदश प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-13-indra-afflicted-by-sin-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट